

196257 - मुअज्जिन की विशेषताएँ

प्रश्न

नमाज के लिए बुलाने (अज्ञान देने) के लिए कौन अधिकृत है? अर्थात् : इस कार्य की ज़िम्मेदारी किसके कंधों पर है? क्या कोई विशिष्ट व्यक्ति है जिसे ऐसा करना चाहिए?

विस्तृत उत्तर

पहली बात :

अज्ञान के लिए यह शर्त नहीं है कि वह किसी विशिष्ट व्यक्ति द्वारा दी जानी चाहिए। यदि कोई मुसलमान व्यक्ति नमाज के लिए अज्ञान देता है, तो उस स्थान के लोगों की ओर से अज्ञान देने का सांप्रदायिक दायित्व समाप्त हो जाता है; क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है : “तुम में से कोई तुम्हारे लिए अज्ञान दे और तुम्हें से सबसे बड़ा तुम्हारी इमामत कराए।” इसे बुखारी (हदीस संख्या : 628) और मुस्लिम (हदीस संख्या : 674) ने रिवायत किया है।

दूसरी बात :

विद्वानों रहिमहुमुल्लाह ने मुअज्जिन के लिए कुछ शर्तों का उल्लेख किया है जिनका पाया जाना ज़रूरी है और कुछ वांछनीय गुणों का उल्लेख किया है जिनका ध्यान रखना चाहिए।

उन शर्तों में से जिनके बिना अज्ञान मान्य नहीं है, यह है कि मुअज्जिन एक समझदार, पुरुष मुसलमान होना चाहिए।

इब्ने कुदामा रहिमहुल्लाह ने फरमाया : “अज्ञान केवल एक समझदार, पुरुष मुसलमान के द्वारा ही सही (मान्य) है। जहाँ तक काफिर और पागल का सवाल है, तो यह उन दोनों से सही नहीं है; क्योंकि वे इबादत करने वालों में से नहीं हैं। और औरत का अज्ञान मायने नहीं रखता, क्योंकि वह उन लोगों में से नहीं है जिनके लिए अज्ञान देना धर्मसंगत है..., और हम इसके बारे में कोई मतभेद नहीं जानते हैं।” “अल-मुग़नी” (1/249) से उद्धरण समाप्त हुआ।

जहाँ तक वांछित गुणों (मुस्तहब चीज़ों) का संबंध है, तो मुअज्जिन के लिए मुस्तहब (वांछनीय) है कि वह अच्छी आवाज़ वाला, अमानतदार व भरोसेमंद, नमाज के समय का ज्ञान रखने वाला और वयस्क हो।

इब्ने कुदामा रहिमहुल्लाह ने फरमाया : मुअज्जिन के लिए भरोसेमंद, अमानतदार और वयस्क होना वांछनीय है; क्योंकि उसपर भरोसा किया गया है (वह भरोसे की स्थिति में है) नमाज और रोज़ा के संबंध में उसे संदर्भ समझा जाता है। इसलिए यदि वह इन

विशेषताओं और गुणों वाला नहीं है, तो संभावना है कि वह उन्हें अपने अज्ञान के द्वारा धोखा दे। तथा चूँकि वह एक उच्च स्थान से अज्ञान देता है, इसलिए सत्र एवं परदे की चीज़ों को देखना उससे सुरक्षित नहीं है।” “अल-मु़नी” (1/249) से उद्धरण समाप्त हुआ।

“अल-मौसूआ अल-फ़िक्हिय्या” (2/368) में आया है : “मुअज्जिन के लिए किन विशेषताओं से सुसज्जित होना वांछनीय है : उसके लिए अमानतदार व भरोसेमंद होना वांछनीय है ; क्योंकि वह समय के प्रति अमीन (विश्वस्त व भरोसेमंद) है, तथा सत्र एवं परदे की चीज़ों को देखने से उसकी निगाहें सुरक्षित हों। तथा फ़ासिक (अवज्ञाकारी) की अज्ञान सही है लेकिन वह मकूह (नापसंदीदा) है ..., तथा यह वांछनीय है कि वह एक सुंदर आवाज़ वाला हो ; क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अब्दुल्लाह बिन ज़ैद से कहा : (बिलाल के साथ खड़े हो जाओ, और तुमने (सपने में) जो कुछ देखा है उसे बताओ, क्योंकि उसकी आवाज़ तुमसे अधिक मधुर है), और क्योंकि वह लोगों तक अपनी आवाज़ पहुँचाने में अधिक सक्षम है..., तथा यह वांछनीय है कि वह नमाज़ के समय के बारे में जानकारी रखने वाला हो ; ताकि वह उसकी निगरानी कर सके और नमाज़ का समय शुरू होते ही अज्ञान दे सके। यहाँ तक कि देखनेवाला अंधे से अच्छा है, क्योंकि जो अंधा है वह नहीं जानता कि नमाज़ का समय कब शुरू होता है।” मा'मूली संशोधन के साथ उद्धरण समाप्त हुआ।

हालाँकि, यहाँ इस तथ्य पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि यदि मस्जिद में एक नियमित मुअज्जिन है, तो किसी को भी अधिकार नहीं है कि अज्ञान देने के उसके अधिकार पर वाद-विवाद करे, या उसपर ज़्यादती करे, ताकि उसके बजाय वह (खुद) अज्ञान कह सके, सिवाय इसके उसकी अनुमति हासिल हो जाए।

और अल्लाह तआला ही सबसे अधिक ज्ञान रखता है।